International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

21वीं सदी की हिन्दी कविता : विविध विमर्श

डॉ. राजेन्द्र सिंह
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
जनता महाविद्यालय, चरखी दादरी (हरियाणा)।

'आत्मनं विद्धि' अर्थात् स्वयं को जानो – ऐसा वेदों में कहा गया है। लगभग इसी आशय की अभिव्यक्ति युनान में सुकरात ने भी 'नो दाइ सेल्फ' कहकर की। देकार्ते ने व्यक्ति अस्मिता को विचार से जोड़ा था – 'आइ थिंक सो आइ एम'। अतः मनुष्य वही है जो चिंतन, मनन और विचार से युक्त है।**1** दूसरे शब्दों में विमर्श मन में होने वाली अहं भाव की स्फूर्ति अर्थात् विचार या विवेचन को माना जाता है। इसका आधार परम्परागत तरीके से होते आये अनाचार, अत्याचार, शोषण आदि का विरोध करना है और स्वयं को सार्थक रूप में स्थापित करने का प्रयास है।

कविता एक दर्पण की भाँति होती है, जिसमें समाज के विविध चित्रों, उपलब्धियों, मान्यताओं, जीवन–मूल्यों, अनुभवों, विचारों, दर्शन आदि को प्रतिबिम्बित किया जाता है। इनको प्रतिबिम्बित करने में कवि की सफलता उसकी संवेदनात्मक विमर्श पर आधारित होती है। हिन्दी–काव्य के इतिहास पर दृष्टिपात करने से आदिकाल से इक्कीसवीं सदी के काव्य के सफर तक सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों एवं उसके परिवर्तनों के आधार पर इसकी विषय–वस्तु में भी काफी परिवर्तन का दौर आया।

इक्कीसवीं सदी में कदम रखते ही एक नये अहसास के गर्व की अनुभूति हुई। विज्ञान के भौतिक सुख साधनों एवं सम्पन्नता की वृद्धि के कारण मानव द्वारा जीवन सुरक्षा, समता एवं आशातीत प्रगति की विचारधारा के मध्य नजर सकारात्मक साहित्य सृजन का श्रीगणेश होने लगा। इस सदी के कवियों ने जीवन की मानवीय सृष्टि करके हिन्दी काव्य को संवदना की नवीन

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

भावभूमि से तारतम्य स्थापित किया जो चेतना के द्वार खोल कर संवेदना को संस्कारित करती दिखाई देती है। वास्तव में इक्कीसवीं सदी की कविता आज के समाज का, संकटापन्न मानव के यथार्थ चित्र की प्रस्तुति है। साथ ही परिवर्तित एवं विघटित मानव–मूल्यों को भी पाठक के समक्ष प्रस्तुत करती है।

इक्कीसवीं सदी की कविताओं में विभिन्न विमर्शों के विचार संचारित होने लगे जिसमें गरीब, दलित, स्त्री, आदिवासी, विकलांग आदि कविताओं का केन्द्र बन कर साहित्य की आवश्यकता बनकर उभरने लगे। इसी दौर में बाजारवाद, वैश्वीकरण और भूमंडलीकरण ने अपनी पहचान खोते हुए मनुष्य को नई सोच, नई राह प्रदान की जिससे वह अपने अस्तित्व संघर्ष के बल खड़ा हुआ और यहीं से साहित्य जगत् में विभिन्न विमर्शों की शुरूआत होती है, जिसकी वर्तमान में चर्चा करना आवश्यक हो जाता है।

1. स्त्री विमर्श :–

स्त्री विमर्श मूलरूप से नारी को मानव रूप में स्थापित करने का ही आग्रह है। स्त्री विमर्श कुंद हो चुकी सोच को धारदार बनाने की एक युक्ति है ताकि स्त्री मानवी होने के नाते आगे बढ़ने, विकास करने एवं व्यक्तित्व सुधारने और सँवारने की बात सोचे। वह दोयम दर्जे पर जीने वाली स्त्री की मुखरता अनायास नहीं है। आज स्त्री वैचारिक दृष्टि से स्वतन्त्र है –''स्त्री विमर्श का आधार वह विद्रोह है जो परम्रागत तरीकों से होते आये शोषण का विरोध करने के लिए स्त्री के मन में जन्म लेता है।''**2** आशीष त्रिपाठी जी ने नारी के विद्रोह की ज्वाला को भरने का भरसक प्रयास किया है। वह कहता है कि आज नारी प्राचीनकाल की मीरा नहीं है, कृष्ण युग की गोपियाँ नहीं है जो अच्छी बुरी परम्पराओं से आँखें मूँद कर बन्धी रहती थी। कवि नारी को उद्विग्न मीरा की भाँत्ति नृत्य करते हुए देखना चाहता है–

अकेली औरत
जब बदनाम होकर
सर झुकाती है
मीरा उद्विग्न होकर नाचती है।''**3**

अतः नारी को अपनी शक्ति का ज्ञान एवं मान होना अति आवश्यक है। उसके जीवन की परिस्थितियों, जीवन के कटु सत्य, अनुभव तथा भुक्त– भोगी बनकर उसने अपने

सुख–दुःख को शब्दबद्ध किया है तब इसे 'स्त्री–विमर्श' के नाम से अभिहित किया गया है। अतः इस परिवर्तित परिवेश में सतत् रूप से आगे बढ़ती हुई पुरूष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती हुई नित्य नये आयाम स्थापित कर रही है। जो कि युग–परिवेश की आवश्यकता भी है।

2. दलित विमर्शः–

दलित परिवार का समाज में, कार्यस्थल पर, धर्म की आड़ में कानून की लचर प्रक्रिया के कारण, अंधविश्वास और रूढ़ियों के कारण, गरीबी के कारण, जाति के कारण, अशिक्षा के कारण निरन्तर शोषण का शिकार होता है। दलित जाति के शोषण के अनेकाविध आयाम है, जिनमें वह जकडी हुई है। यद्यपि प्रयास बहुत पहले ही शुरू हो गया था, फिर चाहे वह कानून के स्तर हो या राजनीतिक स्तर पर। साहित्यकारों ने भी दलित–शोषित लोगों की पीड़ा को अपना वर्ण्य–विषय बनाकर जन–मन तक पहुँचाने का सार्थक प्रयास किया। जिसका प्रभाव समाज पर प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से स्पष्ट दिखाई दे रहा है। इन जंजीरों को तोड़ने के लिये इक्कीसवीं सदी की कविताओं में उन्हें काफी स्थान दिया गया है। दलित विमर्श साहित्य जगत् का सर्वाधिक ज्वलंत विमर्श बनकर उभरा है। ओमप्रकाश बाल्मीकि के शब्दों में, ''दलित शब्द का अर्थ है उपेक्षित, उत्पीड़ित और जीवन की तमाम जरूरतों से वंचित।''**4** सविता चड्ढा की अपनी कविता इस दृष्टि से विचारणीय है–

वे डराते हैं और हम डर जाते हैं

वे जी उठाते हैं और हम मर जाते हैं।

सम्मान में उनके कोई गुस्ताखी ना करे,

यही सोच के हम हर पल बिताते हैं।''**5**

इसी दंश को झेलता दलित एक लम्बे समय से अपनी अस्मिता की तलाश में भटक रहा है। अतः उनके दुखःदर्द को समझने को मानवीय एहसास और हमदर्द बनने की आवश्यकता है।

3. दिव्यांग विमर्श :–

इसी दिशा में 21वीं सदी के कवियों ने अपने काव्य में पर्याप्त महत्त्व प्रदान किया और शोषित, पीड़ित, दलित लोगों की पीड़ा को दूर करने का मार्ग प्रशस्त किया। इस काव्य के अध्ययन–मनन एवं पठन–पाठन से लोगों में जागरूकता आई और इस जागरूकता का परिणाम यह हुआ कि लोग अपने अधिकार को पाने के लिए लगातार रूप से आगे बढ़े और अपने लक्ष्य को भी प्राप्त कर रहे हैं तथा अन्य जरूरतमंद लोगों की सहायता कर रहे हैं ताकि इन दलित–पीड़ित लोगों का भी सामाजिक और आर्थिक स्तर समृद्ध हो सके, तथा समाज में अपना अस्तित्व और अस्मिता पूर्ण रूप से स्थापित कर सकें।

निःशक्तों का वर्ग अर्थ दिव्यांग की वह संख्या जो समाज का एक अभिन्न अंग है। अतः इनकी अपेक्षा के प्रति जब से जागरूकता बढ़ी तो समाज के इस विशाल वर्ग के बारे में सोचने की और साहित्य में दिव्यांग विमर्श की आवश्यकता हुई। इसकी चेतना छतीसगढ़ में 'अखिल भारतीय विकलांग चेतना परिषद' के माध्यम से विकलांगों की सहायता से सक्रियता सतत् रूप में बढ़ी। साहित्यकारों को भी इस संगठन से प्रेरणा प्राप्त हुई। इसी सन्दर्भ में डॉ0 इन्द्र बहादुर सिंह की कविता ने अपने सार्थक भावों की अभिव्यक्ति की है–

उदास आँखों से

अन्धे की घिसी हुई ऐड़ियों से

पापी पेट की सुलगती आग से

या फिर बहरे गूँगे की

बीमार माँ की जख्मी आँखों से

जरूरत तो केवल सफर शुरू करने की है।''**6**

समाज में विकलांगों के प्रति सभी की सोच सहृदयता, सहानुभूति एवं समानता प्रदान करने वाली हो जाने की आवश्यकता पर बल प्रदान किया है। ताकि वे भी समाज में सम्मानजनक तरीके से जीवनयापन कर सकें। दिव्यांग लोगों के प्रति भी सहानुभूति का भाव रखना चाहिए। उनको भी साहित्य एवं समाज में उपयुक्त स्थान देने के लिए अनेक स्तरों पर प्रयास करने चाहिए ताकि वे भी समाज एवं जीवन की मुख्यधारा में आ जायें।

21वीं सदी के कवियों ने इस सत्य को पहचान कर इसे अपने काव्य में स्थान दिया। दिव्यांगों की समस्याओं को पहचान कर उनकी व्यथा को एक मौलिक भावभूमि प्रदान की।

4. आदिवासी विमर्श :–

आदिवासी विमर्श गिरि–कन्दराओं में रहने वाले अन्याय ग्रस्तों की क्रान्ति का साहित्य है– काव्य है जिसमें वेदना, विद्रोह के साथ–साथ सामाजिक न्याय, संस्कृति, भाषा, इतिहास, भूगोल और उनके जीवन की विविध समस्याओं और प्रकृति के प्रति उनके गहरे लगाव की अभिव्यक्ति है। इस विमर्श में अनेक कवियों ने अपने–अपने विचारों की व्यापकता को रचा है। आदिवासियों की जल, मंगल, जमीन और संस्कृति के साथ उनके वर्चस्व को प्रस्तुत किया गया है–

जिन्होंने हमें गोलियों से भूना

वे इन्सान थे

जिन्होंने हमें टापूओं के इधर–उधर खदेड़ा

वे इन्सान हैं

और जो हमारी नस्ल को उजाड़ेंगे

वो भी इन्सान होंगे।''**7**

अतः जीवन की रोजमर्रा की जिन्दगी से लेकर आदिवासियों के पिछड़ेपन को समझकर उनके लिए शिक्षा का प्रसार आवश्यक है ताकि उनमें चेतना का संचार हो और विकास के नाम पर उनके साथ शोषण न हो सके।

21वीं सदी के कवियों ने आदिवासी लोगों की समस्याओं को उजागर किया है। इन लोगों को भी शिक्षा के लिए प्रेरित किया है ताकि शिक्षा प्राप्त करके ये लोग भी समाज और संसकृति की मुख्यधारा से जुड़ जायें और उनके साथ हो रहे अन्याय के विरूद्ध आवाज उठा सकें क्योंकि शिक्षा के अभाव में ये लोगों सदियों पुरानी रूढ़ियों और परम्पराओं को अपनाये हुए हैं। 21वीं सदी के कवियों का ध्यान इस ज्वलन्त समस्या की

ओर गया और अपनी कविता का वर्ण्य–विषय बनाकर इनके सामाजिक– सांस्कृतिक स्तर को उदात्त बनाने का सार्थक प्रयास किया है।

किन्नर विमर्श

किन्नर भी समाज का एक अभिन्न अंग है परन्तु कुछ बीमार एंव दूषित मानसिक वृत्ति के लोग इन्हें हेय और उपहास का पात्र समझने लगे। 21वीं सदी के कवियों ने किन्नर वर्ग की पीड़ा को अनुभूत करके उसे अपने काव्य में प्रश्रय दिया। इनकी भावनाओं को समझते हुए साहित्यकारों ने इस उपेक्षित वर्ग को सामाजिक रूप से उन्नत एवं उन्हें समृद्ध करने का बीड़ा उठाया और उनकी समस्याओं को अपने साहित्य के माध्यम से उजागर किया। साथ ही इन्हें भी शिक्षा प्राप्त करने के लिए जागरूक किया ताकि ये दीन–हीन वर्ग भी समाज की मुख्यधारा से जुड़ सके, आर्थिक रूप से समृद्ध हो सके। इसे किसी भी रूप से हेय न समझा जाये क्योंकि किन्नर जीवन ईश्वर प्रदत्त है। वह भी आम आदमी की तरह प्रेमभाव एवं आदर–सम्मान का अधिकारी है। 21वीं सदी के कवियों ने इनकी इस पीड़ा को पहचान कर अपने काव्य का वर्ण्य–विषय बनाकर इनकी भावनाओं को जन–मन तक पहुँचाया। साथ ही साहित्य को एक नवीन विमर्श भी प्रदान किया।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इक्कीसवीं सदी में विमर्श की विविधता को कवियों ने उसकी समय के अनुसार आवश्यकता एवं अभिन्नता को समझते हुए आज के काव्य को जीवन के विचार विमर्श दृष्टिकोण से देखने का सार्थक प्रयास किया है। इन विभिन्न विमर्शों के उद्घाटन ने पिछले कुछ वर्षों से विमर्श साहित्य को एक नया क्षेत्र प्रदान किया है जो इक्कीसवीं सदी में अपने लक्ष्य को पूरा करने की ओर अग्रसर है। कवियों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से इस दिशा में कार्य और सम्भावनाओं की पूर्ति के दायित्व का बोध कराया है।

सन्दर्भ सूत्र

1. ऋतु भनोट : हिन्दी साहित्य और स्त्री विमर्श – पृ016
2. राजेन्द्र यादव : हंस, बलवन्त कौर के लेख से मार्च 2004 – पृ093
3. आशीष त्रिपाठी : अकेली औरत, समकालीन भारतीय साहित्य – पृ0178
4. ओमप्रकाश बाल्मीकि : दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र – पृ001
5. सविता चड्ढा : युद्धरत आम आदमी – जुलाई–सितम्बर 2007 – पृ005
6. डॉ0 इन्द्र बहादुर सिंह : अपना दिनमान – पृ055
7. हरिराम मीणा : कैसे करोगे साबित! – पृ067